हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Chetan kumar meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 3

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 2 5 4 8 0 8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Chetan

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या **1** और **5** अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

प्रयास ठीक है

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 139

टिप्पणी (Remarks): और अध्ययन अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

19वीं शताब्दी खड़ी बोली के विस्फोटक विकास का चरण है, जिसमें कई कारक भूमिका निभा रहे थे। इन कारकों में ईसाई मिशनरियों को भी गिना जाता है।

ईसाई मिशनरियों के लिए धर्म प्रचार हेतु जरूरी था कि वे भारत की जनता को उसी माध्यम में शिक्षा व उपदेश दें, जिस से वे भली भाँति परिचित हैं। ऐसे में मिशनरियों ने पाया कि खड़ी बोली ही सर्वाधिक लोगों द्वारा समझी पहचानी जाती है, क्योंकि यह उत्तर में कौरवी तथा दक्षिण में दक्खिनी के रूप में प्रचलित थी। अतः मिशनरियों ने हिंदी भाषा में बाइबिल एवं अन्य धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद किया, ऐसे अनुवादकों में मार्शमैन, कैरी का नाम गिना जाता है। इसके

जिससे

प्रोफ़ेसर गिलक्रिस्ट ने 'हिन्दी' भाषा के महत्त्व को समझा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली–9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा मिशनरियों ने विद्यालयों की स्थापना कर खड़ी बोली का प्रारंभ किया। साथ ही, पत्रकारिता के क्षेत्र में धर्म प्रचार हेतु कई पत्र खड़ी बोली में शुरू किये, इनके जरिये वे अपने धार्मिक मतों को प्रचार करने का प्रयास करते।

इन सभी प्रयासों का यह परिणाम हुआ कि खड़ी बोली और अधिक प्रसारित हुई। इस प्रकार ईसाई मिशनरियों का अवदान खड़ी बोली के विकास में अविस्मरणीय है।

6/10

Good -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सुझाव

देवनागरी लिपि का मानकीकरण क्रमशः हुआ है, ~~इसमें पचासों प्रयास~~ कई व्यक्तियों, संस्थाओं व सरकार का हाथ रहा है।

'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने निम्न सुझाव दिए, ताकि देवनागरी का मानकीकरण किया जा सके -

(क) क़, ख़, ग़, फ़, ५ को स्वीकार किया जाए।

(ख) सभी पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) की जगह अनुस्वार को लगाया जाए।

(ग) मात्राओं का प्रयोग अलग से हो। उदाहरण - राम ⇒ र ा म

(ङ) मात्राओं के ऊपर नीचे, दाएँ-बाएँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रयोग को जारी रहने दिया जाए।

3/10

अपर्याप्त अपेक्षा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) खड़ी बोली आंदोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

अयोध्या प्रसाद खत्री का खड़ी बोली आंदोलन में अहम योगदान है। उनका मानना था कि खड़ी बोली में साहित्य भाषा के साथ-साथ, भारत की राष्ट्रभाषा बनने की पूरी क्षमता है। ~~है~~ ~~अन्य~~ वे गद्य तथा पद्य दोनों के लिए खड़ी बोली के प्रयोग करने के पक्षधर थे। उन्होंने विदेशी भाषाओं, क्षेत्रीय बोलियों (ब्रज, अवधि अवधी) तथा अन्य भारतीय भाषाओं (मराठी, गुजराती) से शब्दावली एवं अन्य व्याकरणिक प्रयोगों ~~को~~ को ~~[illegible]~~ समाहित करने के समर्थक थे। वे मानते थे कि इन तत्वों को स्वीकार कर सहज ही खड़ी बोली को समृद्ध किया जा सकता है।

गहराई लाएं। मॉडल उत्तर देखें।

10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपिः अंतर्संबंध

वस्तुत: यह माना जाता है कि ~~खड़ी~~ भारत की अधिकांश बोलियों का संबंध ब्राह्मी लिपि से है, इसी संदर्भ में देवनागरी को भी इसी से उत्पन्न माना जाता है।

ब्राह्मी लिपि भारत की प्राचीनतम लिपि है, जो कालानुक्रम में उत्तर भारत की ~~ब्राह्मी~~ लिपि व दक्षिण भारत की ब्राह्मी लिपि में विभेदित हुई। द्रविड़ परिवार की लिपियों का विकास दक्षिणी ब्राह्मी से माना जाता है। जबकि उत्तरी भारत की प्रचलित लिपि उत्तरी ब्राह्मी से अवतरित हुई।

गुप्त काल में आकर यह उत्तरी ब्राह्मी कई लिपि विशेष प्रवृत्ति धारण करती है और इससे ~~एक~~ कई नागरी लिपियाँ निकलती हैं। इन्हीं में से एक लिपि ~~देवनागरी~~ देवनागरी थी, जिसका

शब्दों लाएं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विकास गुप्तकाल में हुआ।

अतः ब्राह्मी लिपि वह आरंभिक बिंदु है, जहाँ से भारतीय लिपियों का जन्म होता है। इस दृष्टि से देवनागरी लिपि ब्राह्मी लिपि की विरासत को ही धारण करती है।

4½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्य समाज का योगदान

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा में कई सारे तत्वों का योगदान रहा है। ऐतिहासिक रूप से ही हिन्दी अपभ्रंश, अवहट्ट की विरासत को धारण करने के लिए अग्रिहत थी। 19वीं सदी में आकर भारतीय समाज में सुधार शुरू हुआ। इन सुधारकों ने भाषा को भी इसी पहलू के रूप में देखा। कई सारे समाज सुधारक मनीषियों व संस्थाओं के साथ आर्य समाज के पुरोधा दयानंद सरस्वती हिन्दी प्रचार व प्रसार का भार अपने ऊपर लेते हैं।

दयानंद सरस्वती पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने हिन्दी की राष्ट्रभाषा के रूप में वकालत की। क्योंकि, उनका मानना था कि लोगों को संगठित करने, उनका शुद्धिकरण के लिए एक ऐसी भाषा जरूरी

शुद्धीकरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है, जिसे सब लोग समझें। इसी कारण संस्कृत व गुजरात का विद्वान होने के बावजूद दयानंद सरस्वती ने हिन्दी जनभाषा में अपने धार्मिक उपदेश दिए। उन्होंने अपने धार्मिक ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की हिन्दी में रचना की। तथा आर्य समाज को अधिकाधिक हिन्दी प्रयोग व प्रचार के लिए प्रेरित किया। दयानंद एंग्लो इंडियन कॉलेज में हिन्दी का अध्यापन शुरू करवाया।

आर्य समाज से जुड़े लोगों ने बनारस में 'गुरुकुल' की ~~स्थापना~~ स्थापना की तथा लाला लाजपतराय और आर्यसमाजियों ने राष्ट्रीय शिक्षण विद्यालयों में हिन्दी का प्रचलन चलवाया।

अतः आर्य समाज जैसे प्रयासों का ही योगदान था कि आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रवादियों को हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारने में दिक्कत नहीं हुई।

6½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वाधीनता-आंदोलन के दौर में तमिलनाडु और केरल में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी उत्तरी भारत में ऐतिहासिक कारणों से राष्ट्रभाषा थी ही, क्योंकि उत्तर भारत शुरू से ही पाटलिपुत्र, आगरा, दिल्ली के रूप में भारत की राजनीति का अंग रहा। किन्तु, संस्कृत की समवर्ती द्रविड़ भाषाओं के होने के कारण शब्दावली के स्तर पर संस्कृत शब्द केरल व तमिलनाडु की भाषा में मिलते हैं, जबकि हिन्दी संस्कृत की ही उत्तराधिकारिणी हुई।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान केरल व तमिलनाडु के लोग हिन्दी से एकदम अपरिचित से नहीं थे। यहाँ के लोगों व राष्ट्रनेताओं का मानना था कि हिन्दी में ही वह क्षमता है कि वह भारत की राष्ट्रभाषा बन सके। इसलिए, यहाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के कई लोग सामने आये।

केरल से श्रीराम वर्मा, व मद्रास प्रांत से सुब्रमण्यम अय्यर, टी. राजू, सी. राजगोपालाचारी जैसे नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा दिलाने की वकालत की।

इनके प्रयासों से मद्रास में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन हुआ। 'मद्रास हिन्दी प्रचारिणी सभा' तथा इसकी कई क्षेत्रीय शाखाएँ खुलीं। गाँधीजी से भी मद्रास के कई युवकों ने आगे से हिन्दी भाषा सीखने की बात कही। गांधीजी के कई अनुयायी इसी भागीरथ कार्य को सम्पन्न करने में जुट गये।

Sorry for Ink empty

~~कुल मिलाकर कहें तो केरल व तमिलनाडु के लोग हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में तैयार थे, किन्तु आगे चलकर अपनी भाषाओं को वरीयता देने से तमिलनाडु ने तो हिन्दी विरोध की नीति अपना ली।~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1937 में मद्रास में हुए हिन्दी ~~भाषा~~ तमिल सम्मेलन में, सी. राजगोपालाचारी ने स्वयं हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव रखा, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकारा गया। सी. राजगोपालाचारी ने दक्षिण भारत के लोगों से हिन्दी सीखने का आह्वान किया क्योंकि उनके अनुसार "हिन्दी राष्ट्रभाषा तो है ही, जनतांत्रिक भारत की राजभाषा भी होगी।"

वस्तुतः यह वह दौर था जब हर भारतीय स्वतंत्रता के रंग में रंग रहा था, और सभी राष्ट्रवादी मिलकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में बढ़ावा दे रहे थे, कांग्रेस ने तमिलनाडु कांग्रेस समेत सभी क्षेत्रीय समितियों में क्षेत्रीय भाषा के साथ हिन्दी पढ़ाने का भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निर्देश दिया। सी. राजगोपालचारी, वीर राघवाचारी जैसे कांग्रेसियों के प्रयास से मद्रास के विद्यालयों में हिन्दी को अनिवार्य गया।

इस प्रकार से हिन्दी उत्तर से लेकर केरल व तमिलनाडु जैसे दक्षिणवर्ती भागों तक राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने लगी। किन्तु, ध्यातव्य है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इन्हीं राज्यों से हिन्दी विरोध की बातें उठने लगी।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी भाषा के मानकीकरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषा के मानकीकरण से तात्पर्य भाषा का परिष्कृत, परिमार्जित व आदर्श रूप तैयार करना है जिससे वह सभी लोगों के लिए स्वीकृत व मान्य हो तथा अन्य भाषा के ~~लिए~~ लोग भी उन्हीं मानकों से उसे सीखें।

हिन्दी भाषा का विकास ऐतिहासिक: खड़ी बोली से हुआ है। किन्तु, उस समय हिन्दी की कई बोलियाँ अपने स्थानीय प्रभावों से एक दूसरे को प्रभावित कर रही थी। अतः किसी एक मानक पर सर्वसम्मति आवश्यक थी। भारतेंदु काल में मानकीकरण से अधिक खड़ी बोली को साहित्यिक भाषा बनाने पर जोर रहा। इसलिए इस समय की खड़ी बोली में कई अमानकीकृत तत्व थे।

ऐसे में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एक आंदोलन के रूप में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अवतीत हुए और मानकीकरण का बीड़ा उन्होंने अपने कंधों पर उठाया, जिसके लिए उपकरण के रूप में 'सरस्वती पत्रिका' का प्रयोग किया।

द्विवेदीजी ने अपने कठोर अनुशासन, कुशल नेतृत्व से भाषा के मानकीकरण के स्तर पर निम्न प्रयास ~~अवाप~~ किए -

(क) उन्होंने कामताप्रसाद गुरु तथा ~~[illegible]~~ आचार्य वाजपेयी जी से हिन्दी व्याकरण लिखवाई।

(ख) उन्होंने कारक व्यवस्था में विभक्तियों के स्थान पर अलग से संज्ञा शब्दों के बाद परसर्गों के उपयोग की बात कही.
उदाहरण - 'राम ने कहा'

(ग) सर्वनाम के स्तर पर उन्नै, जिन्नै, किन्नै आदि को अमानकीकृत बताया।

(घ) उन्होंने दक्खिनी प्रभाव से भारतेंदु काल में प्रचलित "जम्हाइयाँ लतियाँ लड़कियाँ" जैसे रूप को अमानकीकृत किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कठोर व्याकरणी अनुशासन के बल पर 'आले', 'पुराने' जैसे 'आला'; तथा 'पुराना' के बहुवचनों को अमान्य किया।

(च) उन्होंने कहा कि समान वर्ग के होने पर पंचमाक्षर के जगह पर अनुस्वार का प्रयोग किया।

इसी प्रकार के ढेरों सुधार महावीर प्रसाद जी ने किए और हिन्दी को परिष्कृत, परिमार्जित करने का काम महज कुछ वर्षों में ही ~~सम्पूर्ण~~ लगभग पूरा कर दिया।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

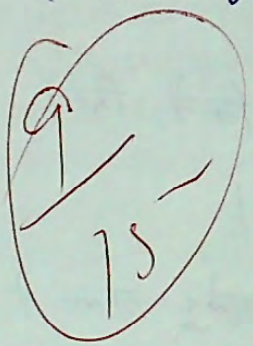

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में ब्रह्म समाज के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा से तात्पर्य वह भाषा है जो किसी क्षेत्र के बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाती हो तथा जिसके साथ लोगों का भावनात्मक व सांस्कृतिक लगाव हो। हिन्दी, संस्कृत प्राकृत अवहट्ट अपभ्रंश की उत्तराधिकारिणी होने के कारण हिन्दी भाषी प्रदेश (सामान्यतः उत्तर भारत) में जनभाषा के रूप में प्रचलित थी। किन्तु, सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन ने इसे राष्ट्रीय अभिमान व अंग्रेजी की आधिपत्यता से बचने का माहौल बना दिया। इसी आलोक में ब्रह्म समाज की भूमिका देखी जा सकती है।

ब्रह्म समाज के आदिपिता राजा राममोहनराय महसूस करते थे कि लोगों में अपनी भाषा के प्रति सम्मान होना चाहिए। उन्होंने बंगाली को तो बढ़ावा दिया ही,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी को भी बढ़ावा देने का निर्णय लिया, क्योंकि हिन्दी में ही वे अपनी एकात्मवादी बातों को अधिकांश जनता तक पहुँचा सकते थे। 1928 में उन्होंने 'बंगबंधु' पत्र के जरिये हिन्दी के पक्ष में आंदोलन चलाया।

राजा राम मोहन राय ने, केशवचंद्र सेन ने ब्रह्म समाज को समूचे भारत में फैलाने का निर्णय लिया। इसके लिए जरूरत थी कि हिन्दी जैसी बहुसंख्यकों द्वारा बोली जाने वाली भाषा का अवलंब लिया जाए। अतः उन्होंने खुलकर हिन्दी में प्रचार करना शुरू किया। उन्होंने जगह-जगह ब्रह्म समाज की शाखाएँ खोली, जहाँ हिन्दी में उपदेश व शिक्षाएँ दी जाने लगी। केशव चंद्र सेन ने दयानंद सरस्वती को संस्कृत के बजाय हिन्दी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भाषा में लिखने व प्रचार करने की सीख दी। इस प्रकार सभी क्षेत्रों के ब्रह्म समाजियों ने हिन्दी को अपनी संप्रेषण का माध्यम बनाया।

ब्रह्म समाज के इसी भागीरथी योगदान के कारण हिन्दी भाषा सदैव इसकी ऋणी रहेगी।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में निम्नलिखित व्यक्तियों के योगदान पर प्रकाश डालिये:

(i) महात्मा गांधी 20

(ii) बाल गंगाधर तिलक 10

(iii) मदनमोहन मालवीय 10

(iv) सेठ गोविन्द दास 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(i) महात्मा गाँधी सिर्फ एक व्यक्तिगत उपस्थिति नही थे, अपितु राष्ट्रीय आंदोलन की धुरी थे। उन्होंने ब्रिटिश विरोध व भारत की उन्नति के लिए लोगों को जोड़ने का माध्यम बनाया, जो बिना किसी एक भाषा के संभव नहीं था। गांधीजी ने इसी बात को समझा कहा कि "हिन्दी ही वह भाषा है जो राष्ट्रभाषा बन सकती है और होनी भी चाहिए" क्योंकि "हिन्दी का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है।" इस प्रकार गांधीजी ने हिन्दी के प्रश्न को स्वराज से जोड़ दिया, क्योंकि उनका मानना था कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूर्ण स्वराज तभी है जब अंग्रेजी का भाषायी साम्राज्य समाप्त हो।

महात्मा गाँधीजी ने भाषा के राष्ट्रभाषा होने के लिए वैज्ञानिक विवेचन भी किया। उनके अनुसार राष्ट्रभाषा होने के लिए निम्न कसौटियों का पालन होना चाहिए -

(क) भाषा बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाती हो

(ख) भाषा समझने व सीखने में सरल हो

(ग) जिसके सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक पक्ष जुड़ा हो।

(घ) जो अपनी प्रकृति में स्वामी हो।

इन्हीं कसौटियों पर कसकर ही उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात की। 1920 के कांग्रेस अधिवेशन में भाषायी आधार पर कांग्रेस की समितियों का पुनर्गठन उन्होंने करवाया। तथा प्रांतीय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषाओं के साथ हिन्दी के प्रयोग की भी बात की।

गांधीजी ने अपने अनुयायियों को दक्षिण भारत में प्रचार प्रसार के लिए भेजा। मद्रास के छात्रों द्वारा हिन्दी सीखने का आह्वान किये जाने पर उन्होंने हिन्दी सीखने की व्यवस्था करवायी। गांधीजी से प्रेरित हो काका कालेकर ने महाराष्ट्र, राजगोपालाचारी ने मद्रास में हिन्दी प्रसार को वरीयता प्रदान की।

इस प्रकार गाँधीजी स्वतंत्रता संग्राम की ऐसी कड़ी थे जो न केवल राजनैतिक एकीकरण के लिए प्रयासरत थे, बल्कि भाषा को इसके लिए जरूरी मानकर हिन्दी प्रचार को भी अपने राजनैतिक लक्ष्य 'स्वराज' से जोड़ते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

गांधीजी के युगप्रवर्तक अवदान के कारण हिन्दी भाषा युग युग तक उनके अहसान का आभारी रहेगी।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) बाल गंगाधर तिलक पक्के स्वदेशी थे। वे प्रत्येक चीज के स्वदेशीकरण के समर्थक थे। वे अंग्रेजी की जगह से विदाई चाहते थे, और उनके स्थान पर हिन्दी को देखना का स्वप्न रखते थे। अपने इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्होंने हिन्दी प्रसार हेतु बहुआयामी प्रयासों का सहारा लिया।

बाल गंगाधर तिलक ने स्वदेशी आंदोलन के दौरान पुरजोर हिन्दी का पक्ष लिया। बंगाल विभाजन से लेकर गुजरात, महाराष्ट्र तक उन्होंने हिन्दी में ब्रिटिश विरोध की आवाज उठाई तथा हिन्दी में जनता का आह्वान किया। उन्होंने हिन्दी प्रसार हेतु 'हिन्दी केसरी' नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया। उन्होंने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

परिष्कृत हिन्दी का प्रयोग पत्रकारिता के जरिये किया तथा गुजरात-महाराष्ट्र प्रदेश में हिन्दी को लोकप्रिय बनाया। इस दौरान उन्होंने काका कालेलकर जैसे राष्ट्रवादियों का सहारा हिन्दी प्रसार के लिए लिया।

तिलक का यह योगदान निश्चित ही काबिलेतारीफ है।

हिन्दी के लिए मराठी का तिलक कॉपर बनवाया

5 1/2 / 10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) मदन मोहन मालवीय को हिन्दी के विकास में अवदान कर्त्ताओं में विशिष्ट व्यक्ति के रूप में गिना जाता था। वे स्वयं भी हिन्दी के विशिष्ट जानकार थे। वे हिन्दी को अखिल भारत की राष्ट्रभाषा बनाने को कृत संकल्प थे।

कांग्रेस से जुड़े रहने के दौरान भी उन्होंने प्रांतिक तौर पर हिन्दी का उपयोग किए जाने की वकालत की। कांग्रेस छोड़ देने के बाद उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना में अहम योगदान दिया। तथा इसके द्वारा हिन्दी प्रसार के कार्यक्रमों को नेतृत्व प्रदान किया।

मदनमोहन ने 1917 में बनारस हिन्दु ~~कॉलेज~~ विश्वविद्यालय की स्थापना की, जिसमें प्रत्येक पाठ्यार्थी के लिए हिन्दी अध्ययन

दैनिक 'हिन्दुस्तान' के संपादक रहे। 'अभ्युदय', 'मर्यादा', 'सनातन धर्म' पत्र हिन्दी के प्रारंभ किए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनिवार्य किया। इस कॉलेज से कई अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्यार्थियों ने हिन्दी सीखी, इनमें बंगाली, मराठी, मद्रासियों प्रमुखों ने हिन्दी में अध्यापन किया। महामना ने सरकार से हिन्दी का प्रचार प्रसार किए जाने की माँग की।

इस प्रकार, महामना मालवीय आजीवन हिन्दी प्रसार में लगे रहे।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(iii) सेठ गोविन्ददास का हिन्दी विकास में नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है, वे अन्य राष्ट्रवादियों की तरह हिन्दी के प्रति प्रतिबद्धता से पलटने वाले नहीं थे, ~~उन्होंने~~ वे हिन्दी के पक्ष में बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने को तैयार थे।

गोविन्दजी ने स्टेट कौंसिल में सर्वप्रथम हिन्दी के प्रश्न को उठाया तथा कांग्रेस की सभी गतिविधियों का माध्यम हिन्दी बनाए जाने की वकालत की।

1963 में जब हिन्दी विरोधी आंदोलन उग्र हो रहे थे, तब उन्होंने पार्टी लीक से हटकर अनेकों विरोधों के बावजूद हिन्दी के पक्ष में संसद में मतदान किया। इसके लिए उन्हें

(शास्त्रा, नवीन, मौलिक, प्रस्तावना स्थापित किया)

अनेक (बहुवचन)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जाना विरोध झेलना पड़ा।

सेठजी ने हिन्दी प्रचार के लिए राष्ट्रव्यापी यात्राएँ की और विशेष रूप से दक्षिण में हिन्दी के प्रति अविश्वास को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी भाषा के पक्ष में सशक्त आंदोलन चलाया।

इस प्रकार, सेठजी की सही प्रतिबद्धता ही थी, जिसने उन्हें हिन्दी प्रचार के लक्ष्य से डिगने नहीं दिया। यह बात उन्हें अन्य से अलग व विशिष्ट करती है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रताप नारायण मिश्र

प्रताप नारायण मिश्र भारतेंदु युग के विशिष्ट रचनाकार हैं। उन्होंने भारतेंदु मंडल में रहकर कविता, निबंध, नाटक, आलोचना, प्रहसन आदि विधाओं में योगदान किया।

मिश्र जी को उनके निबंधों के कारण विशेष तौर पर याद रखा जाता है। उनके निबंध भाव प्रधान थे। वे भारतेंदु मंडल के सबसे जिंदादिल इंसान थे, जो व्यक्तित्व उनके निबंधों में झलकता है।

आवश्यक निबंधों के लिए उन्हें 'हिन्दी का स्टील' कहा गया।

उन्होंने हास्य व्यंग्य के जरिये समाज की समस्याओं पर चिंतन किया। उन्होंने बाल विवाह, विधवा विवाह, वृद्धों की समस्या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर चिंतन किया, जिसका एक नमूना है -

"~~तुन बिपति~~
"कौन करेजो नहीं कसकत है, सुन
बिपता बाल विधावन की।"

प्रताप नारायण मिश्र भारतेंदु की तरह देश के प्रति गहरा चिंतन करते हैं। वे भारत की ~~दुर्दशा~~ दुर्दशा के लिए ~~ईश्वर~~ निपटने हेतु ईश्वर का आह्वान करते हुए कहते हैं -

"हम आरत भारत वासिन पर,
अब दीन दयाल दया करिये।"

मिश्र जी ने 'ब्राह्मण' नामक पत्रिका के जरिये आलोचना का कार्य भी किया। मिश्र जी कानपुर की रसिक मंडली में समस्यापूर्तियों के लिए जाने ख्यात थे। उन्होंने कई नाटक लिखे (जैसे - कलि) तथा कई प्रहसन लिखे।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविवचन सुधा

"कविवचन सुधा" भारतेन्दु द्वारा पत्रकारित पत्रिका है। इसकी शुरुआत भारतेंदु ने हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार करने, जनता तक साहित्य को पहुँचाने, सरकारी नीतियों का विवेचन करने तथा आलोचना संबंधी प्रयोजनों के लिए की।

'कविवचन सुधा' पत्रिका के जरिये भारतेन्दु ने ब्रिटिश सरकार की तीखी आलोचना की थी, इसलिए उन्हें ब्रिटिश कोपभाजन का शिकार बनना पड़ा। ब्रिटिश सरकार ने ~~देशी~~ देशी पत्रकारिता पर प्रतिबंध अधिनियम के जरिये कार्यवाही की।

किन्तु, यह पत्रिका भारतेन्दु की पत्रकारिता का नमूना है, उन्होंने केवल राजनीतिक लेख ही नहीं लिखे, बल्कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के प्रचार को भी प्रेरित किया। इस पत्र की भाषा फारसी-अरबी प्रधान हिन्दी की थी। जो शुरुआती भारतेंदु के भाषा दृष्टिकोण को इंगित करता है।

इस प्रकार, कविवचन सुधा वह पत्रिका है, जिससे भारतेंदु का पत्रकार वाला व्यक्तित्व निखरकर सामने आता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास धारा में मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा को अहम दर्जा प्राप्त है। जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी इसके प्रमुख उपन्यासकार हैं।

इस धारा की अहम विशेषताओं को निम्नबिंदुओं में समेटा जा सकता है-

(1) प्रेमचंद के सामाजिक मनोविज्ञान के विपरीत, इसमें व्यक्तिगत मनोविज्ञान व अंतर्मन के पक्ष पर ज्यादा बल है।

(2) यह धारा फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से बेहद प्रभावित है। अतः इन उपन्यासों में यौन चेतना से जुड़ी बातें, संबंध विच्छेद के हालातों से उत्पन्न मानसिक वेदना खूब दिखाई देती है।

(3) इन उपन्यासों का कोई उद्देश्य नहीं है, केवल व्यक्ति के आंतरिक संवेदनाओं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यथार्थता से आरोपित प्रयास है।

(4) ~~चरित्र और~~ कथानक योजना के स्तर पर यह बने बनाये ढांचे पर नहीं चलते बल्कि कथानक के विखंडन कर चिंतन-मनन-विश्लेषण में चलते हैं। न यहाँ ज्यादा घटनाएँ हैं, ~~न~~ न ज्यादा चरित्र, महज कुछ घटनाओं को मानसिक स्तर पर वर्णित हैं।

(5) इस धारा के चरित्र ~~समाज~~ समाज से नहीं, अपने आप से लड़ते हैं। जैनेन्द्र के नारी ~~अ~~ चरित्र बेहद सशक्त व जीवंत बन पड़े हैं।

(6) इन उपन्यासों की भाषा चिंतन मनन के अनुरूप प्रतीकात्मक, ~~का~~ काव्यात्मक किस्म की है। सभी भावाभी प्रतिमान यहाँ दिखते हैं।

इस प्रकार, जैनेन्द्र के 'त्यागपत्र' व 'परख' ; अज्ञेय के 'शेखर एक जीवनी' जैसे उपन्यास हिन्दी उपन्यास की विशिष्ट उपलब्धियों में गिने जाते हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

केशव के काव्य में निहित विभिन्न उलझनों के कारण उन्हें 'कठिन काव्य के प्रेत' के रूप में जाना जाता है। उनके काव्य में कठोरता का प्रमुख कारण है उनके कवित्व के साथ साथ दार्शनिक, इतिहासज्ञ, पांडित्य पक्ष को एक साथ साध लेने की कोशिश है।

उनके काव्य में निम्न स्तर पर कठिनता दिखती है -

(क) भाषा के स्तर पर संस्कृत के अप्रचलित शब्दों का प्रयोग, वाक्य न्यूनता, पद न्यूनता आदि के कारण भाषा आतंक का माध्यम बन गयी है।

पद न्यूनता - " सी॥ धी॥ श्री॥ धौं॥
राम॥ नाम॥ सत्य॥ धाम॥"

(ख) दूसरी जटिलता उनके छंदो के प्रयोग के स्तर पर है। इतने अधिक प्रकार के छंदो का प्रयोग किया है कि शुक्लजी की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भाषा में कहें तो रामचंद्रिका 'छंदों का अजायबघर' बन गयी है।

(ग) तीसरी जटिलता काव्य के स्तर पर है। वे संबंध निर्वाह कुशलता से नहीं कर पाए हैं। मार्मिक स्थलों का ध्यान नहीं रखा है, जैसे ~~[illegible]~~ रामवनगमन प्रसंग को एक छंद में निपटा दिया।

किन्तु, यह कहना भी सत्य नहीं है कि उनका पूरा काव्य कठिन है। वस्तुतः संवाद योजना का उनका कोई सानी नहीं है। जिसका नमूना है-

" मातु, कहाँ नृपतात! गये सुरलोकहिं, सुत शोक लिये।"

इस प्रकार केशव के काव्य में जटिलता तो है किन्तु दिनकर की भाषा में कहें तो वे ऐसे 'माली हैं, जिसने अपनी बुद्धि से फूल उगाए हैं, न कि बिहारी की तरह "कलों से तैर कुआं"। अत: शुरुआती चरण होने के कारण ऐसे कठिन प्रयोग आए हैं।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) पद्माकर का श्रृंगार-वर्णन

पद्माकर रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं। इन्हें इनके श्रृंगार वर्णन के लिए खासतौर पर जाना जाता है।

पद्माकर दरबारी कवि हैं। कविता उनके लिए 'रोजगार' का साधन है, जिसके लिए जरूरी है कि रजवाड़े जैसे हल्के रसिकों को विलास भरी कविताएँ सुनाई जाए। इसलिए पद्माकर ऐसे ही विलास युक्त श्रृंगार पद उन्हें सुनाते हैं -

"गुलगुली गुल में गलीचा है, गुनीजन हैं,
चाँदनी है, चिक है चिरागन की माला है।
कहै पद्माकर ज्यों, सेज है,
सुराही है, सुराह है, प्याला है।"

पद्माकर का श्रृंगार पक्ष लोकजीवन के त्यौहारों से जुड़कर भी सामने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

आता है-

"या अनुराग की फाग लखौ, जहँ राजत राग किशोर किशोरी,
गोरिन के रंग भीजिगो साँवरो,
साँवरो के रंग भीजिगो गोरिन।"

पद्माकर का श्रृंगार वर्णन भोग वहमकालीन व मनोरंजनकारी मानसिकता से भरा है। उनका श्रृंगार वर्णन अपनी चमत्कारिता, नादात्मकता व ध्वनि मैत्री की वजह से प्रसिद्ध है।

पद्यांश भाव श्रृंगार के वियोग पक्ष का वर्णन किया गया है

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) स्त्री-विमर्श के आलोक में समकालीन हिन्दी उपन्यास पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्रियों की समस्याएँ सदैव से ही हिंदी साहित्य के केन्द्र में रही हैं। प्रेमचंद अपने उपन्यासों में नारी के सामाजिक मनोविज्ञान व उनकी विशिष्ट समस्याओं को उभारते हैं, तो जैनेंद्र जैसे रचनाकार उसके व्यक्तिगत आंतरिक आकांक्षाओं को व्यक्त करते हैं। 'दिव्या' के जरिये यशपाल भी नारी समस्या को तार्किकता प्रदान करते हैं।

किन्तु, इन उपन्यासों की खास बात रही कि इनमें नारी समस्याओं पर पुरुषों ने विचार किया। किन्तु नारीवादी चिंतकों व रचनाकारों का मत है कि 'जागने वाले मन' व 'सोचने वाले मन' में अंतर होता है क्योंकि 'संवेदना' कभी भी 'स्वयं वेदना' से नीची नहीं हो सकती।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी आलोक में ~~कृष्णा सोबती~~, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान जैसी महिला रचनाकारों ने महिलाओं की विशिष्ट समस्याओं पर अपने तरीके से विचार की ठानी।

इनके उपन्यासों की खास बात है कि यहाँ यौन इच्छाओं को अनैतिकता से नहीं देखा गया है, बल्कि सामाजिक दायित्वों के निर्वहन को नैतिकता का आधार बताया है।

कृष्णा सोबती का 'मित्रो मरजानी' उपन्यास तो नारी विमर्श पर महान चिंतन करता ही है, उनके अन्य परवर्ती उपन्यास भी इसी पक्ष को उभारते हैं।

प्रभा खेतान का उपन्यास 'छिन्नमस्ता' नारी चेतना की दृष्टि से अहम है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'कठगुलाब' जैसे उपन्यास के जरिये मृदुला गर्ग ने समकालीन जीवन में शहरीकरण, तकनीकीकरण आदि से उत्पन्न नवीन समस्याओं को उभारा है।

समकालीन समय में नारी विमर्श की धारा अनवरत रूप से जारी है। इस धारा ने उपन्यास धारा को विशिष्ट दृष्टिकोण प्रदान किया है और एक महिला मन की सभी चिंताओं का गहरा चिंतन किया है। यह प्रवृत्ति लगातार उपन्यास धारा को समृद्ध करती जा रही है।

10½/20

कुछ अन्य उपन्यासों का भी उल्लेख करें।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रीतिकाल वह समय है जब भारत की सभी ललित कलाओं में विकास के चरम स्तर देखे जा रहे थे। चित्रकला, संगीत कला, साहित्य आदि अपने विशिष्ट सौंदर्य के कारण जनचर्चित थे।

रीतिकाल रुचियों का काल है। इस काल में विभिन्न ललित कलाओं में विशिष्ट संबंध देखने को मिलता है। मुगल दरबार में यद्यपि संगीतकला को अधिक प्रश्रय नहीं मिला, किन्तु ग्वालियर घराने में संगीत की हिन्दुस्तानी शैली विकसित हुई।

ऐसे में उर्दू शायरी तो अपनी विशिष्ट दार्शनिक व शब्द आदिता से लोगों को आकर्षित कर रही थी, हिन्दी कविता के पास संगीत के तत्वों को शिल्प के स्तर पर धारण करने का अच्छा उपाय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है। जिसकी झलक इस उदाहरण में देखी जा सकती है -

"आर रही भाल भलकार लालकी।
धार धमक लागे झनक चुरीन की।।"

इसी प्रकार चित्रकला में भी मुगलशैली का उत्कर्ष जहाँगीर के समय देखने को मिला, किन्तु शाहजहाँ के समय आते आते चित्रकला पर कृत्रिम तत्वों का प्रयोग बढ़ा। चित्रकला में स्वर्ण रंगों तथा चटकीले रंगों का प्रयोग बढ़ा। यही प्रवृत्ति इस काल की कविताओं पर असर डाल रही थी कि साहित्य में भी बिहारी जैसे कवियों को "बड़े उजेरो गेह" जैसे प्रभाव दिखाई दे रहे थे। और वे कवि अक्सर नायिकाओं के तन की प्रकाश व लालिमा का बखान करते।

वस्तुत: ललित कलाओं में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

यह साम्यता इसलिए मिलती है क्योंकि यहाँ ललितकलाओं का उद्देश्य शुद्ध रूप से रसास्वादन का हो गया। इस संदर्भ में बिहारीलाल ~~कबित्त यचित्त मित~~ के संदर्भ में "अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग" की बात कहकर ~~उन्होंने~~ ~~के~~ "तंत्रीनाद कवित्त रस" अर्थात संगीत कविता के लिए रस को ही साध्य बताते हैं।

वस्तुत: रीतिकालीन मानसिकता ही ऐसी थी कि सभी ललितकलाओं को रसिक भाव ~~से~~ व केवल मनोरंजन की दृष्टि से देखा गया, अत: ललितकलाओं का काव्य पर प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' के मृणाल के चरित्र पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैनेन्द्र मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा के विशिष्ट रचनाकार हैं। जैनेन्द्र के चरित्रों की खास बात है कि उनके नारी चरित्र अधिक जीवंत, व्यक्तित्व सम्पन्न व गतिशील नजर आते हैं। चाहे 'सुनीता' की सुनीता हो; चाहे 'परख' की कट्टो हो या चाहे त्यागपत्र की मृणाल। ये सभी पात्र 'आत्मदान' व 'अहं का विसर्जन' अपनी विशिष्टता तय करते हैं।

'मृणाल' के चरित्र की विशेषताओं को निम्न बिंदुओं में रेखांकित किया जा सकता है-

(क) मृणाल प्रेमचंद की 'धनिया' की तरह सामाजिक चरित्र नहीं, व्यक्तिगत चरित्र है। उसे अपने आत्मसम्मान से बेहद लगाव है। वह लाख दुख सहकर भी आत्मसम्मान नहीं खोती। वह पति द्वारा छोड़ दिये जाने पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वावलंबी बनती है। वह उच्छिष्ट वर्ग में अपने उत्तरदायित्व को रहने का निर्णय करती है, जबकि प्रमोद उसे बार-बार ले जाने का ~~लिए~~ प्रयास करता है।

(ख) 'मृणाल' की खास बात है उसकी प्रतिबद्धता। वह जिस भी नये रिश्ते में जाती है, पूरे मनवचन से ग्रहीत करती है, यही कारण है कि वह कोयले वाले को पतित्व में स्वीकार करती है। किन्तु परिस्थितियां उसके जीवन को इतना गतिशील बना देती हैं कि किसी एक रिश्ते में उसे ~~जगह~~ स्थायी जगह नहीं मिल पाती। इसलिए उसके व्यक्तित्व के मूल गति करते रहते हैं।

(ग) मृणाल की इच्छा भी ~~नारी~~ नारी स्वभाव के अनुरूप अपनी यौन संतुष्टि को प्राप्त करने की है। ~~किन्तु~~ कहती है कि 'दान स्त्री का धर्म है।" वह यहाँ आत्मदान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है। किन्तु इच्छाओं को पूरा न होता देख वह यौन इच्छाओं का दमन करने के लिए बाध्य है।

(घ) मृणाल के चरित्र में समाज को लेकर असमंजस का भाव है। वह समाज से विद्रोह भी करना चाहती है, तो दूसरी ओर समाज में रहने की बात भी करती है। वह कहती है "समाज टूटा कि फिर हम कहाँ रहेंगे।"

(ङ) मृणाल बेहद महत्वाकांक्षी व व्यक्तिगत चरित्र है जो चीड़िया की तरह उड़ने का ख्वाब देखती है, किन्तु जीवन की सच्चाई इतनी कड़वी है कि उन्हें तोड़कर रख देती है। मृणाल की मौत समाज की वर्जनाओं पर आघात है।

इस प्रकार, 'मृणाल' के चरित्र को हिन्दी उपन्यास में एक विशिष्ट उपलब्धि के रूप में गिना जाता है।

चिड़िया

7/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation